समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

(२) व्यधिकरण बहुव्रीहि → जिस बहुव्रीहि समास में दोनों पद भिन्न-भिन्न कारक के हों, उसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे —

शूलपाणि- शूल (त्रिशूल) है पाणि (हाथ) में जिसके वह, अर्थात शंकर।

इस उदाहरण में पहला पद कर्ता (प्रथमा) कारक का है एवं दूसरा पद अधिकरण कारक का है।

व्यधिकरण तत्पुरुष की तरह ही व्यधिकरण बहुव्रीहि के निम्नलिखित छह भेद हैं —

(i) कर्म बहुव्रीहि → सुखप्राप्त - सुख को प्राप्त किया है जिसने, वह।

(ii) करण बहुव्रीहि → कृतकार्य - किया गया है कार्य जिसके द्वारा, वह।

(iii) सम्प्रदान बहुव्रीहि → दत्तधन - दिया गया है धन जिसके लिए, वह।

(iv) अपादान बहुव्रीहि → निर्धन - निर्गत है धन जिससे, वह।

(v) संबंध बहुव्रीहि → चतुर्भुज - चार भुजाएँ हैं जिसकी, वह।

(vi) अधिकरण बहुव्रीहि → कृदन्त - कृत है अंत में जिसके, वह।

(3.) तुल्ययोग बहुव्रीहि → जिस बहुव्रीहि समास में पहला पद 'साथ' अर्थ बतलानेवाला हो, उसे तुल्ययोग बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे –

सपरिवार - परिवार है साथ जिसके, वह।
सचेत - जो चेत (होश) के साथ है, वह।

(4.) व्यतिहार बहुव्रीहि → जिस बहुव्रीहि समास में पदों से घात-प्रतिघात का बोध हो, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे –

बातबाती - बात-बात से हुई लड़ाई।
मुक्का-मुक्की - मुक्के से हुई लड़ाई।

— क्रमशः